बाप समान फरिश्ता वर्ष

बेफिक्र सप्ताह

16.12.2012

1. **स्वामान** – मैं बेफिक्र बादशाह हूँ।

- जिनके लिये सोचने का कार्य भी भगवान करते हों...जिनके भाग्य का निर्माण स्वयं भाग्यविधाता कर रहे हों... जिनका साथी स्वयं भगवान हो... क्या ऐसी आत्माएँ कभी किसी बात की चिंता कर सकती हैं...! ऐसी आत्माएँ कितनी निश्चित वा बेफिक्र होंगी...!!

2. **योगाभ्यास** –

अ. मैं बेफिक्र बादशाह हूँ... इस स्वमान में रहते हुए विचार करें कि मुझे कौन साथ दे रहा है...किसने मेरा हाथ पकड़ा है...किसका हाथ मेरे सिर पर है...ऐसा चिंतन करते हुए सदा नशे में झूमते रहें...।

ब. मैं बेफिक्र फरिश्ता सूक्ष्मवतन में हूँ...बापदादा के हजार भुजाओं की छत्रछाया मेरे सिर पर है...।

स. सर्वशक्तिवान मेरे सिर के ऊपर छत्रछाया है...उनकी छत्रछाया में मैं सदा सुरक्षित, बेहद आनंदित व निश्चिंत हूँ...।

3. **धारणा निश्चिंत जीवन**

– 'बापदादा को फिकर दे दो और फखुर ले लो।' – शिव भगवानुवाच

- सच्चे ज्ञानी वो हैं जो ड्रामा की निश्चित भावी को जानते हुए निश्चिंत रहते हैं।
  कहते भी हैं चिंता ताकि कीजिये जो अनहोनी होय...।
- चिंता चिता के समान है जो हमारी सारी शक्तियों को जलाकर राख कर देती है।

4. **स्वचिंतन** –

- मुझमें कहाँ-कहाँ मेरापन आता है ?
- मेरेपन से नुकसान ?
- मेरे को तेरे में कैसे बदलें ?

जैसे – मेरा परिवार नहीं, तेरा (बाबा का) परिवार।
मेरी समस्याएँ नहीं, तेरी (बाबा की) समस्याएँ।

5. **साधकों प्रति** – प्रिय साधकों ! जैसे-जैसे हम विनाशकाल की ओर बढ़ रहे हैं, वैसे-वैसे परिस्थितियाँ बद से बदतर होती जा रही हैं। समस्याएँ विकराल रुप लेती जा रही हैं। लोग गमों की आँधी में त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। इसलिये अब हमें ईश्वरीय नशे में रहकर अपनी स्थिति को अचल-अडोल बनाना है। ताकि हम सभी को भय और चिंताओं से मुक्त कर सकें। सारा संसार हमारी ओर प्यासी निगाहों से देख रहा है। अब हमें हदों से निकलकर इस बेहद की सेवा में लग जाना है।